

बाँस हस्तशिल्प का परिचय: वन विज्ञान केंद्र (वीवीके), मिज़ोरम के अंतर्गत कला और व्यापार सीखना

Introduction to Bamboo Handicrafts: Learning the Art and Trade under Van Vigyan Kendra(VVK), Mizoram



16th to 20th March 2026
ICFRE-BRC, Aizawl, Mizoram



कृपया अपना संस्करण चुनें/ Please choose your version

[हिन्दी संस्करण](#)

[English Version](#)

Organized by:

I.C.F.R.E.-Bamboo & Rattan Centre, Aizawl, Mizoram
(A unit of I.C.F.R.E.-R.F.R.I., Jorhat, Assam)

संक्षिप्त विवरण

आयोजन का नाम	बाँस हस्तशिल्प का परिचय: वन विज्ञान केंद्र (वीवीके), मिज़ोरम के अंतर्गत कला और व्यापार सीखना
तिथि	16.03.2026 से 20.03.2026 तक
अवधि	5 दिन
कार्यक्रम का स्थान	भा.वा.अ.शि.प.-ब.बें.कें., आइजोल, मिजोरम
प्रतिभागियों की संख्या	20
भाग लेने वाली संस्था	एडेंथर वेंग के स्थानीय निवासी
आयोजन करने वाली संस्था	भा.वा.अ.शि.प. – बांस एवं बेंत केंद्र, बेथलहम वेंगथलांग, आइजोल, मिजोरम
अनुदान देने वाली संस्था	भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (भा.वा.अ.शि.प.), देहरादून (कैम्पा विस्तार के अंतर्गत)
सम्मानित अतिथि	श्री सी. श्रोतलियाना, अध्यक्ष, स्थानीय परिषद, एडेंथर
मुख्य अतिथि	श्री एच. लालरेमल्लुआंगा, कॉर्पोरेटर, ए.एम.सी. वार्ड नंबर VI



विस्तृत विवरण

भा.वा.अ.शि.प. – बांस एवं बेंट केंद्र, आइजोल ने **वन विज्ञान केंद्र** (वी.वी.के.), आइजोल के अंतर्गत **16 से 20 मार्च 2026** तक '**बांस हस्तशिल्प का परिचय: कला और व्यापार सीखना**' विषय पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 20 स्थानीय प्रतिभागियों को बांस हस्तशिल्प का प्रशिक्षण देना और स्थायी आजीविका के अवसर प्रदान करना था। आइजोल के एडेंथर वेंग इलाके से कुल 20 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

दिवस-1 (16.03.2026)

उद्घाटन सत्र:

कार्यक्रम का शुभारंभ एम.एच.आई.पी. हॉल में आयोजित औपचारिक उद्घाटन समारोह से हुआ। भा.वा.अ.शि.प.-ब.बें.के. के वैज्ञानिक 'डी' और प्रमुख **श्री संदीप यादव** ने स्वागत भाषण दिया और सतत आजीविका को बढ़ावा देने के लिए भा.वा.अ.शि.प.-ब.बें.के. द्वारा किए जा रहे विभिन्न अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़ते हुए, भा.वा.अ.शि.प.-वर्षावन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट के निदेशक **डॉ. नितिन कुलकर्णी** ने इस बात पर जोर दिया कि यह प्रशिक्षण केवल उत्पाद बनाने की 'कला' के बारे में नहीं है, बल्कि इसके पीछे के 'व्यापार' में महारत हासिल करने के बारे में भी है। उन्होंने जैव-अर्थव्यवस्था की क्षमता पर प्रकाश डाला और प्रतिभागियों से हस्तशिल्प को उद्यमिता और अतिरिक्त घरेलू आय के एक व्यवहार्य मार्ग के रूप में देखने का आग्रह किया।

विशिष्ट अतिथि **श्री सी. श्रोतलियाना** ने स्थानीय समुदाय को कौशल आधारित ऐसे अवसर प्रदान करने के लिए ब.बें.के. के प्रति आभार व्यक्त किया और प्रशिक्षुओं को इस ज्ञान का उपयोग उत्पादक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

मुख्य अतिथि **श्री एच. लारेमतलुआंगा** ने अपने मुख्य भाषण में बांस क्षेत्र में कौशल विकास के लिए ब.बें.के. के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने शहरी गरीबों के कौशल विकास को लक्षित करने के लिए आइजोल नगर परिषद (ए.एम.सी.) और ब.बें.के. के बीच मजबूत साझेदारी की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने दीर्घकालिक रोजगार और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए स्वयं सहायता समूहों (एस.एच.जी.) के गठन के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

सत्र का समापन भा.वा.अ.शि.प.-ब.बे.के. के वैज्ञानिक-बी श्री सुभाप्रदा बेहरा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

तकनीकी सत्र:

इस दिन अनुभवी मास्टर ट्रेनर श्रीमती वनलालछनहिमी के मार्गदर्शन में व्यावहारिक सत्रों की शुरुआत भी हुई, जिसने आगामी व्यावहारिक शिक्षा की नींव रखी।

दिवस-2 (17.03.2026)

दूसरे दिन का मुख्य उद्देश्य बांस की कारीगरी में बुनियादी व्यावहारिक कौशल विकसित करना था। प्रतिभागियों को बांस की टोकरी बनाने की तकनीकों से परिचित कराया गया, जिनमें कच्चे माल का चयन, कटाई, आकार देना और बुनाई शामिल थी।

व्यावहारिक प्रशिक्षण से प्रतिभागियों को बांस को संभालने और उसके गुणों को समझने का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। प्रशिक्षकों ने चरण-दर-चरण मार्गदर्शन प्रदान किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रत्येक प्रशिक्षु प्रक्रिया का प्रभावी ढंग से पालन कर सके। सत्र के अंत तक, प्रतिभागियों ने टोकरी निर्माण और डिज़ाइन की बुनियादी समझ विकसित कर ली थी।

दिवस-3 (18.03.2026)

तीसरे दिन, प्रशिक्षण बांस की हस्तकला की अधिक उन्नत तकनीकों की ओर बढ़ा। प्रतिभागियों ने गहन व्यावहारिक सत्रों में भाग लिया, जहाँ उन्होंने विभिन्न शिल्प विधियों को सीखा और अपने बुनाई और परिष्करण कौशल में सुधार किया।

उत्पाद विकास में सटीकता, रचनात्मकता और दक्षता बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रशिक्षुओं को विभिन्न डिज़ाइनों और पैटर्नों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे उनके शिल्प कौशल और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। प्रशिक्षक के निरंतर पर्यवेक्षण और प्रतिक्रिया ने कौशल के निरंतर विकास को सुनिश्चित किया।

दिवस-4 (19.03.2026)

चौथे दिन उत्पाद विविधीकरण और सीखे गए कौशलों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर जोर दिया गया। प्रतिभागियों ने पिछले सत्रों में सीखी गई तकनीकों का उपयोग करते हुए बांस के कोस्टर और डस्टबिन जैसी उपयोगी वस्तुएं बनाने पर काम किया।

व्यावहारिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त, आइजोल स्थित खादी एवं ग्राम उद्योग आयोग (के.वी.आई.सी.) की श्रीमती जोदिनपुई द्वारा एक जानकारीपूर्ण सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में बांस आधारित स्टार्टअप और लघु उद्यमों के लिए उपलब्ध सरकारी योजनाओं, वित्तीय सहायता और समर्थन प्रणालियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की गई।

कौशल विकास और जागरूकता निर्माण के इस संयोजन ने प्रतिभागियों को बांस हस्तशिल्प के तकनीकी और व्यावसायिक दोनों पहलुओं को समझने में मदद की।

दिवस-5 (20.03.2026)

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रतिभागियों द्वारा निर्मित उत्पादों को पूरा करने और प्रस्तुत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रशिक्षुओं ने अपनी हस्तशिल्प वस्तुओं को अंतिम रूप दिया, जिससे उनके द्वारा सीखे गए ज्ञान और रचनात्मकता का प्रदर्शन हुआ।

प्रतिभागियों के अनुभव, सुझाव और कार्यक्रम के बारे में उनकी समग्र राय जानने के लिए एक प्रतिक्रिया सत्र आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण से संतुष्टि व्यक्त की और व्यावहारिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का समापन एक विदाई सत्र के साथ हुआ, जिसमें सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए, जो प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल समापन का प्रतीक था।

निष्कर्ष

प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और इसने अपने लक्षित उद्देश्यों को प्राप्त किया। इसने व्यावहारिक कौशल विकास को बाजार के अवसरों और संस्थागत सहयोग के ज्ञान के साथ जोड़कर एक व्यापक शिक्षण अनुभव प्रदान किया।

इस प्रकार की पहल स्थानीय समुदायों में स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने, पारंपरिक शिल्प कौशल को संरक्षित करने और उद्यमिता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उद्घाटन सत्र की झलकियाँ



अ



ब



स



द



इ



फ



ग



ह

चित्र १: अ-ह: उद्घाटन सत्र की झलकियाँ

व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र की झलकियाँ



अ



ब



स



ड



इ



फ



ग



ह

चित्र १: अ-ह: व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र की झलकियाँ

व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र की झलकियाँ



चित्र १: अ-ह: व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र की झलकियाँ

पांचवे दिन की झलकियाँ



अ



ब



स



ड



इ



फ



ग



ह

चित्र १: स-ह: विदाई सत्र की झलकियाँ

प्रिंट मीडिया कवरेज

दिनांक: 17.03.2026

अखबार: न्यूज़लिनक, आइजोल

One-Week Handicraft Training Prog. Inaugurated at Edenthar



Aizawl, March 16: A one-week specialized training programme titled "Introduction to Handicrafts: Learning the Art and Trade" was officially inaugurated today at the MHIP Hall, Edenthar Veng, Aizawl. Organized by the ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (BRC), Aizawl, the programme aims to equip 20 local participants with essential skills in the bamboo and handicraft sector.

The inaugural ceremony was graced by Pu H. Lalremtuanga, Corporator of EdentharVeng, as the Chief Guest, and C. Hratliana, Chairman of the Local Council, Edenthar Veng, as the Guest of Honour.

Key Highlights of the Inaugural Session

Shri SandeepYadav, Scientist 'D' & Head of BRC Aizawl, delivered the wel-

come address and provided a comprehensive briefing on the various research and extension activities undertaken by ICFRE-BRC to promote sustainable livelihoods.

Joining via video conferencing, Dr. Nitin Kulkarni, Director of ICFRE-RFRI Jorhat, emphasized that the training is not just about the "art" of making products, but mastering the "trade" behind them. He highlighted the potential of the bio-economy and urged participants to view handicrafts as a viable path toward entrepreneurship and additional household income.

The Guest of Honour, C. Hratliana, expressed his gratitude to BRC for bringing such skill-based opportunities to the local community, encouraging the train-

ees to utilize this knowledge to become productive and responsible citizens.

In his keynote address, Chief Guest Pu H. Lalremtuanga lauded BRC's efforts in skill development within the bamboo sector. He stressed the need for a stronger partnership between the Aizawl Municipal Council (AMC) and BRC to target the skilling of the urban poor. He further highlighted the importance of forming Self-Help Groups (SHGs) to ensure long-term employment and financial stability.

The event concluded with a formal vote of thanks delivered by Shri Subhprada Behera, Scientist 'B', who thanked the dignitaries and participants for their commitment to the five-day programme, which is scheduled to run from March 16 to March 20, 2026.

प्रिंट मीडिया कवरेज
 दिनांक: 17.03.2026
 अखबार: वांगलैनी, आइजोल

**Thiamhnáng tah
 inzirtirna buatsaih**
 ICFRE-Bamboo
 and Rattan Centre,
 Bethlehem Vengthlang
 chuan nimin khan
 Edentharr Veng MHIP
 Hall-ah thiamhnáng tah
 inzirtirna an buatsaih
 tan a, bialtu corporator
 H Lalremtluanga'n a
 hmanpui. Training hi
 chawlhkar khat awh tur a
 ni a, Edentharr Venga mi
 20 an tel a ni.

प्रिंट मीडिया कवरेज
दिनांक: 17.03.2026
अखबार: विर्थली, आइजोल

Kar khat awh tur Hnangtah Training

Kar khat awh tur Thiam hnang tah in zirtirna hun chu Edenthar MHIP hall ah nimin khan tan a ni. He training hi ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Bethlehem Vengthlang te buatsaih niin, Pu H. Lalremtluanga, Corporator, AMC Ward No, VI chu khuallian niin, Pu C. Hratlana, Chairman, Local Council Edenthar, khual zahawm a ni. He training ah hian Edenthar vengchhung a tang a thlan chhuah bik mi 20 te trainingah hian an tel a, Pi Vanlalchhanhimi, Master Trainer in heng thlan chhuah bik mi 20 te

hi training a pe a, Pu Sandeep Yadav, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC chuan ICFRE-BRC hmalak na hrang hrang tarlangin, Dr, Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI, Jorhat pawh in online hmang a he hun hi rawn tel pui bawk, Thiam hnangtah hmang a eizawng tu te chawi kan zel chu a pawimawh thu sawiin, Trainees te chu a hmasawn zel thei tur khawp a thiamna paw chhuak ngei turin a chah bawk. Training hian Tunkar chhung Zirtawpni thleng a awh ang.

Brief Summary

Name of Event	Introduction to Bamboo Handicrafts: Learning the Art and Trade under Van Vigyan Kendra(VVK), Mizoram
Date(s)	16.03.2026 to 20.03.2026
Duration	05 Days
Venue	ICFRE-BRC, Aizawl, Mizoram
No. of Participants	20
Participating Agency(s)	Locals from Edenthar Veng
Organizing Agency(s)	ICFRE-Bamboo & Rattan Centre, Bethlehem Vengthlang, Aizawl, Mizoram
Funding Agency(s)	Indian Council of Forestry Research & Education (ICFRE), Dehradun (under CAMPA Extension)
Guest of Honour	Shri C. Hratliana, Chairman, Local Council, Edenthar
Chief Guest	Shri H. Lalremtluanga, Corporator, AMC Ward No. VI

Detailed Description

The **ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Aizawl** organized a week long Training on '**Introduction to Bamboo Handicrafts: Learning the Art and Trade**' from **16th to 20th March 2026** under the **Van Vigyan Kendra (VVK), Aizawl**. The programme aimed to train 20 local participants in bamboo handicrafts and promote sustainable livelihood opportunities. A total of 20 participants from Edenthar Veng locality of Aizawl attended the training.

Day 1 (16.03.26)

Inaugural Session:

The programme commenced with a formal inauguration ceremony held at MHIP Hall. **Shri Sandeep Yadav**, Scientist 'D' & Head of BRC Aizawl, delivered the welcome address and provided a comprehensive briefing on the various research and extension activities undertaken by ICFRE-BRC to promote sustainable livelihoods.

Joining via video conferencing, **Dr. Nitin Kulkarni**, Director, ICFRE-RFRI Jorhat, emphasized that the training is not just about the "art" of making products, but mastering the "trade" behind them. He highlighted the potential of the bio-economy and urged participants to view handicrafts as a viable path toward entrepreneurship and additional household income.

The Guest of Honour, **Shri C. Hratliana**, expressed his gratitude to BRC for bringing such skill-based opportunities to the local community, encouraging the trainees to utilize this knowledge to become productive and responsible citizens.

In his keynote address, Chief Guest **Shri H. Laremtluanga** lauded BRC's efforts in skill development within the bamboo sector. He stressed the need for a stronger partnership between the Aizawl Municipal Council (AMC) and BRC to target the skilling of the urban poor. He further highlighted the importance of forming Self-Help Groups (SHGs) to ensure long-term employment and financial stability.

The session concluded with a vote of thanks delivered by **Shri Subhaprada Behera**, Scientist-B, ICFRE-BRC.

Technical Sessions:

The day also marked the beginning of hands-on sessions under the guidance of **Mrs. Vanlalchhanhimi** an experienced master trainer, setting the foundation for the upcoming practical learning.

Day 2 (17.03.26)

The second day focused on developing fundamental practical skills in bamboo craftsmanship. Participants were introduced to the techniques involved in bamboo basket making, including selection of raw materials, cutting, shaping, and weaving.

The hands-on training allowed participants to gain direct experience in handling bamboo and understanding its properties. Trainers provided step-by-step guidance, ensuring that each trainee could follow the process effectively. By the end of the session, participants developed a basic understanding of basket construction and design.

Day 3 (18.03.26)

On the third day, the training progressed to more advanced techniques in bamboo handicrafts. Participants engaged in intensive practical sessions where they learned diverse crafting methods and improved their weaving and finishing skills.

The focus remained on enhancing precision, creativity, and efficiency in product development. Trainees were encouraged to experiment with different designs and patterns, thereby improving their craftsmanship and confidence. Continuous supervision and feedback from the trainer ensured steady skill development.

Day 4 (19.03.26)

Day four emphasized product diversification and practical application of learned skills. Participants worked on creating functional items such as bamboo coasters and dustbins, applying the techniques acquired in previous sessions.

In addition to the practical training, an informative session was conducted by **Mrs. Zodinpuii** from the Khadi and Village Industries Commission (KVIC), Aizawl. The session provided valuable insights into government schemes, financial assistance, and support systems available for bamboo-based startups and small-scale enterprises. This combination of skill development and awareness building helped participants understand both the technical and business aspects of bamboo handicrafts.

Day 5 (20.03.26)

The final day of the training programme focused on the completion and presentation of products created by the participants. Trainees finalized their handicraft items, showcasing their learning outcomes and creativity.

A feedback session was conducted to gather participants' experiences, suggestions, and overall impressions of the programme. Participants expressed satisfaction with the training and highlighted the usefulness of hands-on learning.

The programme concluded with a valedictory session during which certificates were distributed to all participants, marking the successful completion of the training programme.

Conclusion

The training programme was successfully conducted and achieved its intended objectives. It provided a comprehensive learning experience by combining practical skill development with knowledge of market opportunities and institutional support.

Such initiatives play a crucial role in promoting sustainable livelihoods, preserving traditional craftsmanship, and encouraging entrepreneurship among local communities.

Glimpses Inaugural Session



Figure 1: A-H: Glimpses of the Inaugural Session

Glimpses of Hands-on Training Session



Figure 1: A-H: Glimpses of the hands-on training session

Glimpses of Hands-on Training Session



Figure 1: A-H: Glimpses of the hands-on training session

Glimpses of Day 5



Figure 1: C-H: Glimpses of the valedictory session

Print Media Coverage

Date: 17.03.2026

Newspaper: NEWSLINK, Aizawl

One-Week Handicraft Training Prog. Inaugurated at Edenthar



Aizawl, March 16: A one-week specialized training programme titled "Introduction to Handicrafts: Learning the Art and Trade" was officially inaugurated today at the MHIP Hall, Edenthar Veng, Aizawl. Organized by the ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (BRC), Aizawl, the programme aims to equip 20 local participants with essential skills in the bamboo and handicraft sector.

The inaugural ceremony was graced by Pu H. Lalremtuanga, Corporator of Edenthar Veng, as the Chief Guest, and C. Hratliana, Chairman of the Local Council, Edenthar Veng, as the Guest of Honour.

Key Highlights of the Inaugural Session

Shri Sandeep Yadav, Scientist 'D' & Head of BRC Aizawl, delivered the wel-

come address and provided a comprehensive briefing on the various research and extension activities undertaken by ICFRE-BRC to promote sustainable livelihoods.

Joining via video conferencing, Dr. Nitin Kulkarni, Director of ICFRE-RFRI Jorhat, emphasized that the training is not just about the "art" of making products, but mastering the "trade" behind them. He highlighted the potential of the bio-economy and urged participants to view handicrafts as a viable path toward entrepreneurship and additional household income.

The Guest of Honour, C. Hratliana, expressed his gratitude to BRC for bringing such skill-based opportunities to the local community, encouraging the train-

ees to utilize this knowledge to become productive and responsible citizens.

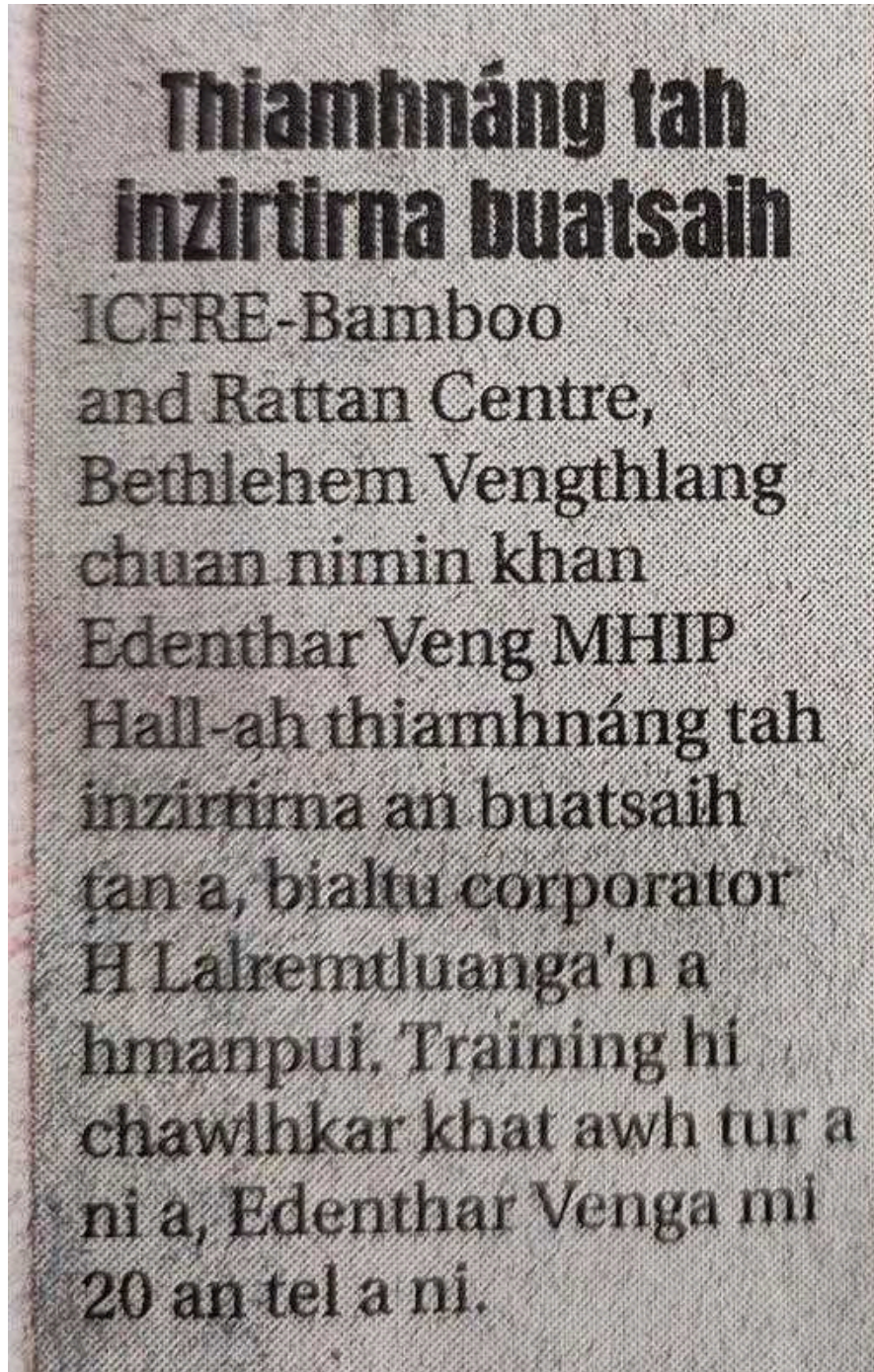
In his keynote address, Chief Guest Pu H. Lalremtuanga lauded BRC's efforts in skill development within the bamboo sector. He stressed the need for a stronger partnership between the Aizawl Municipal Council (AMC) and BRC to target the skilling of the urban poor. He further highlighted the importance of forming Self-Help Groups (SHGs) to ensure long-term employment and financial stability.

The event concluded with a formal vote of thanks delivered by Shri Subhprada Behera, Scientist 'B', who thanked the dignitaries and participants for their commitment to the five-day programme, which is scheduled to run from March 16 to March 20, 2026.

Print Media Coverage

Date: 17.03.2026

Newspaper: Vanglaini, Aizawl



Print Media Coverage

Date: 17.03.2026

Newspaper: Virthli, Aizawl

Kar khat awh tur Hnangtah Training

Kar khat awh tur Thiam hnang tah in zirtirna hunchu Edentharr MHIP hall ah nimin khan tan a ni. He training hi ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Bethlehem Vengthlang te buatsaih niin, Pu H. Lalremthuanga, Corporator, AMC Ward No, VI chu khuallian niin, Pu C. Hratlana, Chairman, Local Council Edentharr, khual zahawm a ni. He training ah hian Edentharr vengchhung a tang a thlan chhuah bik mi 20 te trainingah hian an tel a, Pi Vanlalchhanhimi, Master Trainer in heng thlan chhuah bik mi 20 te

hi training a pe a, Pu Sandeep Yadav, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC chuan ICFRE-BRC hmalak na hrang hrang tarlangin, Dr, Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI, Jorhat pawh in online hmang a he hun hi rawn tel pui bawk, Thiam hnangtah hmang a eizawng tu te chawi kan zel chu a pawimawh thu sawiin, Trainees te chu a hmasawn zel thei tur khawp a thiamna paw chhuak ngei turin a chah bawk. Training hian Tunkar chhung Zirtawpni thleng a awh ang.